गौतम बुद्ध

''गौतम बुद्ध ने न तो कभी खुद को ईश्वर कहा, न ही किसी के ईश्वर होने का दावा किया उनका धर्म मानव द्वारा मानव की भलाई के लिए खोजा गया धर्म है''

गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के प्रवर्तक थे। राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में उनका जन्म 563 ईस्वी पूर्व तथा मृत्यु 483 ईस्वी पूर्व मे हुई थी। उनको इस विश्व के सबसे महान व्यक्तियों में से एक माना जाता है।

जीवनी

जन्म

गौतम गोत्र में जन्मे बुद्ध का वास्तविक नाम सिद्धार्थ गौतम था। उनका जन्म शाक्यगणराज्य की राजधानी कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी में हुआ था। दक्षिण मध्य नेपाल में स्थित लुंबिनी में उस स्थल पर महाराज अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व बुद्ध के जन्म की स्मृति में एक स्तम्भ बनवाया था। उनकी माता का उनके जन्म के सात दिन बाद निधन हो गया था। उनका पालन पोषण शुद्दोधन की दूसरी रानी महाप्रजावती ने किया। शिशु का नाम सिद्धार्थ दिया गया जिसका अर्थ है "वह जो सिद्धी प्राप्ति के लिए जन्मा हो"। जन्म समारोह के दौरान साधु द्रष्टा आसित अपने पहाड़ के निवास से घोषणा की, कि *बच्चा या तो एक महान राजा या एक महान पवित्र आदमी बनेगा। सुधोधना ने पांचवें दिन एक नामकरण समारोह आयोजित कियाए और आठ ब्राह्मण विद्वानों को भविष्य पढ़ने के लिए आमंत्रित किया। सभी ने एकसी दोहरी भविष्यवाणी की, कि बच्चा या तो एक महान राजा या एक महान पवित्र आदमी बनेगा.*

बाल्यकाल

शाक्यों के राजा **शुद्धोधन**' सिद्धार्थ के पिता थे। कहा जाता है कि भविष्यवाणी को सुनकर राजा शुद्धोधन ने अपनी सामर्थ्य की हद तक सिद्धार्थ को दुःख से दूर रखने की कोशिश की। फिर भी, 29 वर्ष की उम्र में, उनकी दृष्टि चार दृश्यों पर पड़ी (संस्कृत – चतुर्निमित्त, पालि– चत्तारि निमित्तानि) – एक वृद्ध विकलांग व्यक्ति, एक रोगी, एक मुरझाती हुई पर्थिव शरिर्, और एक साधु। इन चार दृश्यों को देखकर सिद्धार्थ समझ गये कि सब का जन्म होता है, सब को बुढ़ापा आता है, सब को बीमारी होती है, और एक दिन, सब की मृत्यु होती है। उन्होने अपना धनवान जीवन, अपनी पत्नी, अपना पुत्र एवं राजपाठ सब को छोड़कर एक साधु का जीवन अपना लिया ताकि वे जन्म बुढ़ापे, दर्द, बीमारी, और मृत्यु के बारे में कोई उत्तर खोज पाएं।

सत्य की खोज

सिद्धार्थ ने दो ब्राह्मणों के साथ अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढने शुरू किये। समुचित ध्यान लगा पाने के बाद भी उन्हें इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिले। फ़िर उन्होने तपस्या की परंतु उन्हे अपने प्रश्नों के उत्तर फ़िर भी नहीं मिले। फ़िर उन्होने कुछ साथी इकठ्ठे किये और चल दिये अधिक कठोर तपस्या करने। ऐसे करते करते छः वर्ष बाद भूख के कारण मरने के करीब–करीब से गुज़रकर बिना अपने प्रश्नों के उत्तर पाएं, वे फ़िर कुछ और करने के बारे में सोचने लगे। इस समय, उन्हे अपने बचपन का एक पल याद आया जब उनके पिता खेत तैयार करना शुरू कर रहे थे। उस समय वे एक आनंद भरे ध्यान में पड़ गये थे और उन्हे ऐसा महसूस हुआ कि समय स्थित हो गया है।

ज्ञान प्राप्ति

कठोर तपस्या छोड़कर उन्होने आर्य अष्टांग मार्ग ढूंढ निकालाए जो मध्यम मार्ग भी कहलाता जाता है क्योंकि यह मार्ग दोनो तपस्या और असंयम की पराकाष्ठाओं के बीच में है। अपने बदन में कुछ शक्ति डालने के लिये उन्होने एक ब्राह्मणी से कुछ खीर ली थी। वे एक पीपल के पेड़ (जो अब बोधि वृक्ष कहलाता है) के नीचे बैठ गये प्रतिज्ञा करके कि वे सत्य जाने बिना उठेंगे नहीं। वे सारी रात बैठे और सुबह उन्हे पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया। उनकी अविजया नष्ट हो गई और उन्हे निर्वन यानि बोधि प्राप्त हुई और वे 35 की उम्र तक बुद्ध बन गये। उनका पहला धर्मोपदेश वाराणसी के पास सारनाथ मे था जो उन्होने अपने पहले मित्रो को दिया। उन्होने भी थोडे दिनो मे ही बोधि प्राप्त कर ली। फिर गौतम बुद्ध ने उन्हे प्रचार करने के लिये भेज दिया।

शिक्षा

बुद्ध के उपदेशों का सार इस प्रकार है –

- सम्यक ज्ञान

बुद्ध के अनुसार धम्म यह है–

- जीवन की पवित्रता बनाए रखना
- जीवन में पूर्णता प्राप्त करना
- निर्वाण प्राप्त करना
- तृष्णा का त्याग
- यह मानना कि सभी संस्कार अनित्य हैं
- कर्म को मानव के नैतिक संस्थान का आधार मानना

बुद्ध के अनुसार क्या अ–धम्म है––

- परा–प्रकृति में विश्वास करना
- ईश्वर में विश्वास करना
- आत्मा में विश्वास करना
- यज्ञ में विश्वास करना

- कल्पना–आधारित विश्वास मानना
- धर्म की पुस्तकों का वाचन मात्र

बुद्ध के अनुसार सद्धम्म क्या है–

जो धम्म प्रज्ञा की वृद्धि करे––

- जो धम्म सबके लिए ज्ञान के द्वार खोल दे
- जो धम्म यह बताए कि केवल विद्वान होना पर्याप्त नहीं है
- जो धम्म यह बताए कि आवश्यकता प्रज्ञा प्राप्त करने की है

जो धम्म मैत्री की वृद्धि करे––

- जो धम्म यह बताए कि प्रज्ञा भी पर्याप्त नहीं है, इसके साथ शील भी अनिवार्य है
- जो धम्म यह बताए कि प्रज्ञा और शील के साथ–साथ करुणा का होना भी अनिवार्य है
- जो धम्म यह बताए कि करुणा से भी अधिक मैत्री की आवश्यकता है.

जब वह सभी प्रकार के सामाजिक भेदभावों को मिटा दे–

- जब वह आदमी और आदमी के बीच की सभी दीवारों को गिरा दे
- जब वह बताए कि आदमी का मूल्यांकन जन्म से नहीं कर्म से किया जाए
- जब वह आदमी–आदमी के बीच समानता के भाव की वृद्धि करे

मृत्यु

गौतम बुद्ध की मृत्यु 80 वर्ष मे हुइ थी

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।